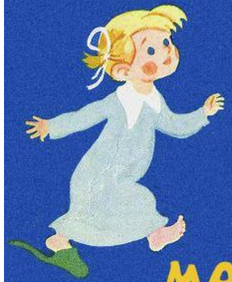
Galina Lebedeva

गैलिना लेबेडेवा





चित्र: एल. मिल्चिन

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

MASHA' S AWFUL PILLOW

माशा का भयानक तकिया



माँ ने अपनी बेटी माशा को बिस्तर पर लिटाया, उसे कंबल उढ़ाया, लाइट बंद की और फिर वो कमरे से बाहर चली गईं.

माशा कुछ देर तक वहीं लेटी रही, लेकिन उसे नींद नहीं आई. पहले तो उसे गर्मी महसूस हुई, फिर बिस्तर सख्त लगने लगा और इसके अलावा, उसे उसका तकिया बहुत सख्त और भारी लगा. माशा गुस्सा हुई. उसने तकिये पर मुक्का मारा और बड़बड़ाई, "ओह, तुम भयानक, गर्म, और एकदम सख्त हो!"



फिर उसने अपने कंबल को तब तक लात मारी जब तक कि वो फर्श पर नहीं गिरा. "मुझसे दूर हो जाओ, भारी, खुरदुरे पुराने कंबल!"

फिर माशा बिस्तर से फिसलकर उठी और उसने अपना पैर पटका. “मुझे इस बिस्तर से नफरत है! और मैं सोना नहीं चाहती! सोने में कोई मज़ा नहीं है!”

उसने पैरों को अपनी चप्पलों में फंसाया और फिर दबे पाँव कमरे से बाहर निकल गई. उसकी माँ के कमरे में शांति थी. माशा कुछ देर तक वहीं खड़ी और सुनती रही. फिर वो बाहरी दरवाजे की ओर और बरामदे की सीढ़ियों से नीचे चली गई.



न सोने में कितना मज़ा है!

वह रास्ते से नीचे उतर गई. त्वायका कुत्ते ने अपना सिर केनेल से बाहर निकाला और गुर्राया, "घुर्र-रर! वहां कौन है?"

"वो मैं हूं, माशा."

"तुम सो क्यों नहीं रही हो? अब तो बहुत देर हो गई है."

"मैं अपने भयानक बिस्तर पर सो नहीं सकती. मैं अपने बिस्तर पर गुस्सा हूँ. मैं उसमें दोबारा फिर कभी नहीं सोऊंगी."

"तुम सही कह रही हो," त्वायका ने कहा. "रात की अच्छी नींद के लिए कुत्ते के घर से बेहतर कोई और जगह नहीं है. वहां लेटने के लिए नरम ताज़ी घास होती है, और जैसे ही आप बिस्तर पर लेटते हैं, आपको अद्भुत सपने आने लगते हैं. तुम अंदर आ जाओ!"

"अरे, यह कितने मज़े की बात है!"



त्वायका उसके लिए जगह बनाने के लिए बाहर निकली. माशा अपने घुटनों के बल झुकी और रेंग कर अंदर घुसी. उसने अंदर लेटने की कोशिश की, लेकिन वो जगह बिल्कुल भी आरामदायक नहीं थी, वो एक घुटन भरी और तंग जगह थी. फिर त्वायका ने अपना सिर अंदर कर लिया. उसके मुँह में एक हड्डी थी.

"यह तुम्हारे लिए है. वो तुम्हारे सपनों को स्वादिष्ट बना देगी."



"धन्यवाद," माशा ने वापस रेंगते हुए कहा. "मुझे लगता है कि तुम्हारे पास बहुत अच्छा घर है, लेकिन मेरा यहां पर सोने का मन नहीं है."

"मालूम नहीं तुम कौन सी ज़न्नत ढूंढ रही हो!" त्वायका ने आहत भरे स्वर में कहा.



माशा यह देखने के लिए मुर्गियों के दबड़े की ओर भागी कि क्या धब्बेदार मुर्गी ने उसके लिए कोई धब्बेदार अंडा दिया था.



जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला, पीटर-मुर्गे ने अपने पंख फैलाए, अपना सिर इधर-उधर घुमाया और बड़ी सख्त आवाज में कहा. "तुम क्या चाहती हो?"



"मैं यह पूछने आई हूं कि क्या धब्बेदार मुर्गी ने मेरे लिए कोई धब्बेदार अंडा दिया है."

"क्या तुम कुछ और der सब्र नहीं नहीं कर सकती हो!" मुर्गा सचमुच गुस्से में लग रहा था. "मुर्गियाँ सफेद अंडे देती हैं. धब्बेदार अंडे बहुत दुर्लभ होते हैं. जाओ, अपने बिस्तर पर वापस जाओ.''

"मैं बिस्तर पर नहीं जा सकती."

"क्यों नहीं?"

"मैं अपने बिस्तर से गुस्सा हूं. वो गरम और सख्त है."

"मैं तुमसे सहमत हूं. रात के आराम के लिए एक अच्छी जगह से बेहतर कुछ भी नहीं है. हम मुर्गे-मुर्गियां एक-दूसरे के करीब सटकर सोते हैं और फिर एक-दूसरे को गर्म रखते हैं. तुम भी हमारे साथ आ जाओ!"

माशा आख़िरकार दबड़े में घुसने में कामयाब रही. वो वहां बिल्कुल झुककर बैठी थी, एक तरफ मुर्गी उसे गर्म कर रही थी और दूसरी तरफ पीटर-मुर्गा उसे गर्म कर रहा था. वो सच में अच्छा था.



लेकिन जैसे ही माशा ने अपनी आंखें बंद कीं, वो अपनी जगह से गिर पड़ी. यह बड़ा अच्छा था कि नीचे कुछ भूसा पड़ा था और उसे चोट नहीं लगी.



वो मुर्गों के दड़बे से बाहर निकली और वापस अपने घर की ओर भागी. लेकिन वो अंदर नहीं गई. वो बरामदे की सीढ़ियों पर बैठ गई. एक पक्षी उड़कर आया और सीधा उसकी गोद में एक झटके के साथ उतरा. वो एक अजीब दिखने वाला पक्षी था.



"हेलो. तुम कौन हो?"

“मैं एक चमगादड़ हूँ. मैं दिन में तुम्हारी अटारी में सोता हूँ और रात में उड़ता हूँ. तुम सो क्यों नहीं रही हो?”

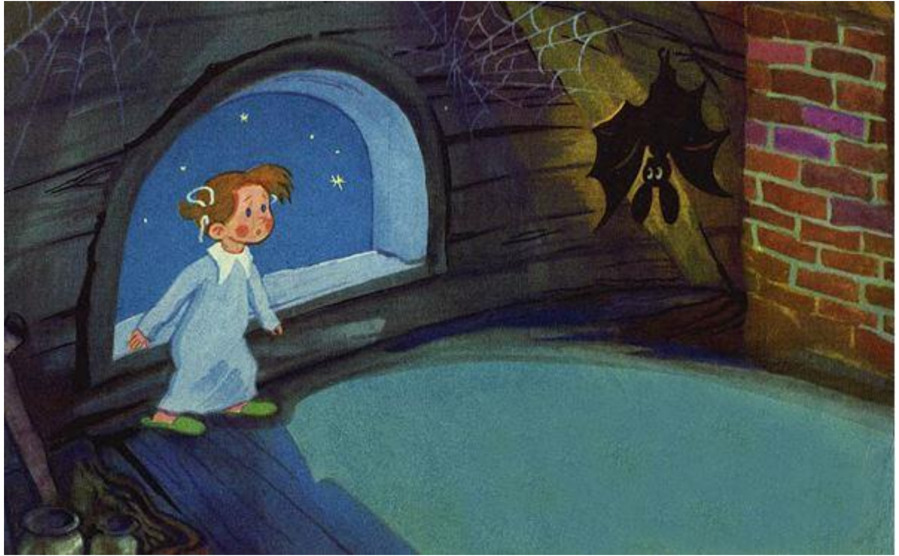
"मेरा बिस्तर आरामदायक नहीं है."

"ओह यह तो बहुत बुरी बात है. क्या तुम मेरी कुछ सहायता चाहती हो?"

"हां."

"फिर मेरे पीछे-पीछे अटारी तक आओ."

चमगादड़ ने अपने पंख फड़फड़ाये और एक छोटी सी खिड़की से होते हुए अटारी में चला गया. माशा उसके पीछे लकड़ी की सीढ़ी पर चढ़ गई.



"यह मेरा सोने का कमरा है."

"लेकिन तुम्हारा बिस्तर कहाँ है?"

"मेरे लिए बस इतना ही काफी है," चमगादड़ ने कहा और वो हंसा. “मुझे बिस्तर की ज़रूरत ही नहीं है. मैं सीधे छत के नीचे जाता हूं, और वहां एक बड़ी कील को पकड़कर उससे उल्टा लटक जाता हूं. तुम भी आ जाओ. मैं तुम्हें अपनी एक विशेष कील दूंगा."



माशा को याद आया कि कैसे वो मुर्गी के दबड़े में गिरी थी. फिर उसने अपने दुखते घुटने को रगड़ा.

"मैं कभी भी उल्टा लटक नहीं पाऊंगी?" वो आश्चर्यचकित हुई. फिर मैं निश्चित रूप से अपने सिर के बल गिरूंगी! और वैसे भी यह अटारी बहुत ही गंदी है."

"ठीक है?" चमगादड़ ने कहा.

माशा ने कोई जवाब नहीं दिया. वो पहले से ही अस्थिर सीढ़ी से धीरे-धीरे नीचे उतर रही थी. फिर वो बाड़ के एक छेद से रेंगती हुई तालाब की ओर गई. मेंढकों ने डर के मारे टर्राना बंद कर दिया. छपाक, छपाक करके वे पानी में कूद गए.



बूढ़े बगुले ने डर के मारे अपने पंख फड़फड़ाए, लेकिन जब उसने देखा कि वहां केवल एक छोटी लड़की थी तो फिर वो शांत हुई. "तुम यहां क्यों इधर-उधर दौड़ रही हो, और मेरे मेंढकों को डरा रही हो?"

"मुझे नींद नहीं आ रही है."

"ही-ही-ही," बगुले ने खांसा. आप बता सकते थे कि उसे सर्दी हुई थी. “मुझे लगा कि मेरी जैसी बूढ़ी औरतें को ही रात को नींद नहीं आती है. इस नमी से मुझे गठिया हो गया है. लेकिन तुम्हें क्या परेशानी है?"

"कुछ नहीं," माशा ने असहजता से कहा. "हर रात बिस्तर पर सोना एक बेहद उबाऊ काम है."



हां मुझे पता है. तो ठीक है, तुम यहां नरकट में मेरे साथ आओ और फिर हम दोस्त बनेंगे. मैं तुम्हें एक मेंढक खिलाऊंगी, और फिर तुम मेरे बगल में कीचड़ में एक पैर पर खड़े हो सकती हो. मैं तुम्हें अपने पंखों से ढक दूंगी."



"मुझे मेंढकों से डर लगता है," माशा ने फुसफुसाते हुए कहा. “और पानी गीला है! मैं तुम्हारे घर में बिल्कुल भी सोना नहीं चाहती."

"रोन्टू बच्ची!" बगुले ने गुस्से से कहा. “तो फिर तुम चली जाओ! तुम्हारे आंसुओं के बिना ही यहां काफी नमी है.‘’

माशा वापस घर की ओर मुड़ी. “तालाब सोने के लिए बहुत ही ठंडी और गीली जगह है, उसने सोचा. “अब क्या बिस्तर पर एक अच्छे गर्म कम्बल के नीचे सोना अच्छा नहीं होगा. और वो कंबल बिल्कुल भी खुरदुरा नहीं है. वो सचमुच में एक प्यारा कंबल है. और मेरा तकिया भी बहुत मुलायम है.”



माशा वापस घर की ओर मुड़ी. "तालाब सोने के लिए बहुत ही ठंडी और गीली जगह है, उसने सोचा. "अब क्या बिस्तर पर एक अच्छे गर्म कम्बल के नीचे सोना अच्छा नहीं होगा. और वो कंबल बिल्कुल भी खुरदुरा नहीं है. वो सच में एक प्यारा कंबल है. और मेरा तकिया भी बहुत मुलायम है."

अंत